भिवानी जनपद का साहित्यिक परिवेश

Monika Goyal

Lecture in Vaish College of Education, Rohtak

भिवानी जनपद हरियाणा प्रान्त का सिरसा के बाद वृहदतम जनपद है। यह जनपद अपने आप में विविध संस्कृतियों की संगम स्थली है। इसके पश्चिमी भाग में राजस्थान की मारवाड़ी माटी की महक तथा पूर्वी भाग में रोहतक से सटे होने के कारण अक्खड़ कौरवी की छाप तथा पूर्व पश्चिम में शहीद राव तुलाराम की छवि तथा दक्षिण उत्तर में हिसार से सटे होने के कारण महान संत जम्भों जी के उपदेशों का प्रभाव दिखाई पड़ता है। साहित्यिक दृष्टिकोण से इसके अतीत को जहाँ कवि शंभुदास, अम्बासहाय से संजोया है वही इसके वर्तमान को रमाकान्त दीक्षित, बिजेन्द्र गाफिल, रघुबीर प्रसाद सरल, मूलचन्द जी मूल ने अपने सतत् सृजन से समृद्ध किया है।

साहित्यकार को यदि अपनी अभिव्यक्ति के लिए व्यापक और विस्तृत प्रचार प्रसार तथा प्रकाशन का मंच प्राप्त न हो तो कितना ही श्रेष्ठ साहित्य हो काल के आघात से कवलित हो सकता है। यह भिवानी के साहित्यकारों का अहोभाग्य है कि यहाँ प्राचीनकाल से ही साहित्यपोषी अनेकानेक संगठन कार्य करते रहे हैं। सीधे मंच पर काव्यात्मक विमर्श प्रतियोगिताएँ भी यहाँ आयोजित की जाती रही है। यहाँ साहित्य संरक्षण, संवर्धन व पोषण करने वाले संस्थाओं में कुछ प्रमुख निम्नलिखित है।

1. त्रिवेणी परिवार, भिवानी

यह संस्था भिवानी की सर्वाधिक सक्रिय संस्थाओं में अग्रण्य है डॉ0 अनिल गौड़ इस संस्था के वर्तमान महासचिव है। सर्वप्रथम इस संस्था के माध्यम से भिवानी के रचनाकारों की कविताओं का एक संकलन "भिवानी की माटी" प्रकाशित हुआ था। इसके बाद हरियाणा प्रान्त के "बाँगर भूमि" के रचनाकारों का काव्य संकलन एक वृहद् रूप में संस्थ ने प्रकाशित करवाया जिससे संस्था की कीर्ति पताका आधे प्रान्त में फैल गई।

बिजेन्द्र गाफिल और पूनमचन्द वेणु द्वारा सम्पादित 'हरियाणवी वर्णमाला का कायदा' अपने आप में मील का पत्थर हैं। 5 सितम्बर, 2012 को संस्था ने 'धरा के बोल' शीर्षक से काव्य संकलन निकाला जिसमें पूरे प्रान्त के नामचीन रचनाकारों की रचनाएं संकलित की गई थी। यह संस्था प्रत्येक वर्ष 5 सितम्बर को लोक संस्कृति के संवधर्न के लिए लोक नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन करवाती है।

हरियाणा के पूर्व मुख्यमन्त्री बनारसी दास गुप्ता ने संस्था के कार्यों की सराहना करते हुए कहा था "त्रिवेणी के संचालक साहित्य के क्षेत्र में जो कार्य कर रहे है वह अनुशसनीय है सभी हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में जो दीप प्रज्जवलित कर रहे है" उसका प्रकाश पूरे देश में फैलेगा।"

2. हिन्दी प्रचार सभा, चरखी दादरी

इस संस्था का पहला आयोजन विवेकानन्द जयन्ती के अवसर पर 12 जनवरी, 2013 को किया गया। हर माह एक सफल आयोजन करने वाली इस नई संस्था ने 19 जनवरी, 2014 को अपने वार्षिक आयोजन में हरियाणा के सम्मानित कवियों के साथ एक स्तरीय कवि सम्मेलन और सम्मान समारोह करके सबको चौंका दिया इस अवसर पर डॉ0 रमाकान्त शर्मा, डॉ0 शिवकान्त शर्मा, डॉ0 रामनिवास मानव को सम्मानित किया गया तथा डॉ0 लाज कौशल के लघु कथा संग्रह का विमोचन भी किया गया। दादरी नगर में साहित्यिक परिवेश का निर्माण करने में इस संस्था का योगदान प्रशसनीय कहा जा सकता है।

3. चन्द्रोदय शिक्षण संस्था, भिवानी

साहित्यिक परिवेश को समृद्ध करने में इस संस्था का विशेष योगदान हैं। 14 सितम्बर, 2000 को इस संस्था ने प्रमुख साहित्यकार रमाकान्त दीक्षित को सम्मानित किया। 14 सितम्बर, 2002 में संस्था ने डॉ0 राधाकृष्ण चंदेल को हिन्दी के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए सम्मानित किया। 28 मार्च, 2010 को एक भव्य कवि सम्मेलन का जिसमें वरिष्ठ कवियों ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं को भाव विभोर किया था संस्था ने तीन वर्षों तक 'आलोक पथ' का भी प्रकाशन किया। हिन्दू धर्म की प्राणवायु रामचरितमानस पर नौ दिवसीय परिचर्या अनुष्ठान इस संस्था का विशिष्ट आयोजन हैं। संस्था ने सन्त स्वामी उमानन्द को 'मानसमणि' की उपाधि से अलंकृत किया।

4. सांस्कृतिक मंच भिवानी

यह संस्था भारतीय संस्कृति व साहित्य को संरक्षण प्रदान करने वाली प्रमुख सक्रिय संस्था है। आर्थिक आधार पर सबल यह संस्था जरूरतमंद साहित्यकारों को आर्थिक सहायता प्रदान करती है। इस संस्था ने अपने कर्मनिष्ठ और समर्पित कार्यकताओं के प्रयास से 'सांस्कृतिक सदन' नाम से आधुनिक रूप से सुसज्जित सभागार बनाने में सफलता प्राप्त की है। हरियाणा के सेक्सपियर नाम से विख्यात लखमीचन्द के सांगों का मंचन करवाने का श्रेय इस संस्था को है। प्रत्येक वर्ष 8 अगस्त को यह संस्था हरियाणा स्तर पर 'राजेश जैन चैतन कविता' पुरस्कार प्रदान करती हैं। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्तर के कवियों के साथ एक स्थानीय कवि को प्रस्तुति का मौका दिया जाता है।

इस संस्था द्वारा 8 अगस्त, 2013 में महिला कवयित्रियों की रचनाओं का संकलन निकाला गया तथा उसके लोकार्पण पर महिला कवयित्रि सम्मेलन आयोजन किया गया जिसकी पूरे प्रान्त में प्रंशसा हुई।

5. राष्ट्रीय साहित्य साधना मंच, भिवानी

इस संस्था का गठन भिवानी नगर के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ0 जे. पी. शर्मा की अध्यक्षता में किया गया आरम्भिक आयोजन के उद्‌बोधन में उन्होंने कहा था "जो साहित्य जगत के देदीप्यमान भास्कर हैं उन्हें हमारा सादर नमन है किन्तु हमारे मंच का प्रयास है कि हम उन नवांकुरों को उद्‌भवन का परिवेश प्रदान करे जिन्हें स्थापित मठाधीशों का कठोर मृतिका आवरण कभी बाहर नहीं निकलने देता।"

पहले आयोजन में आयोजित कवि सम्मेलन में 8 कवियों में से 7 कवि ऐसे थे जिन्होंने मंच पर पहली बार प्रस्तुति दी थी। डॉ0 योगेन्द्र शर्मा 'अरूण' तथा राज्यकवि उदयभानृ हंस को स्तूभ सम्मान भी प्रदान किया गया। 1 जून, 2011 को संस्था ने भिवानी के प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ0 रमाकान्त दीक्षित की जयन्ती विचार गोष्ठी के रूप में मनाई जिसमें उनके जीवन से सम्बन्धित संस्मरण सुनाए गए।

वर्तमान में यह मंच लगभग सुसुप्तावस्था में प्रतीत हो रहा है।

6. अखिल भारतीय साहित्य परिषद, भिवानी

राष्ट्रीय स्तर की इस संस्था की पताका भिवानी नगर में सर्वप्रथम स्थापित करने का श्रेय डॉ0 सुरेन्द्र कुमार वत्स को जाता है। साहित्य परिषद् की भिवानी ईकाई दो बार हरियाणा प्रान्त के साहित्यकारों का प्रान्तीय अधिवेशन आयोजित करवा चुकी है। हरियाण में पहली बार प्रकाशित हरियाणवी काव्य रामायण का प्रकाशन अपने स्तर पर करवाया। परिषद् ने संस्था के तत्कालीन महामन्त्री प्रख्यात गीतकार डॉ0 रमाकान्त शर्मा तथा युवा कवि कपिल सर्वेश के सम्पादन में 'दुर्वा' नामक पत्रिका का संचालन भी कुछ वर्षों तक किया। सन् 1995 में डॉ0 मनोज भारत के श्रीमद् भगवद्गीता के काव्य रूपान्तर तथा ज्ञानेन्द्र तेवतिया के लघु कथा संग्रह 'प्यासी औलाद' के लोकापर्ण के आयोजन में डॉ0 हरिश्चन्द्र वर्मा तथा हरियाणा के राज्य कवि डॉ0 उदयभानु हंस स्वयं उपस्थित हुए थे। इसी संस्था द्वारा चन्द्रप्रभाकर कोकड़ा की 12 पुस्तकों के एक साथ विमोचन का आयोजन तथा कवि सम्मेलन का आयोजन भी हुआ। 22 सितम्बर, 2013 को शहीदी दिवस पर धनसिंह नेहरा की पुस्तक 'नेताजी का निधन – एक रहस्य' पुस्तक का विमोचन प्रान्तीय महामन्त्री डॉ0 योगेश वशिष्ठ द्वारा किया गया। भिवानी में वर्तमान में साहित्य की किसी भी विद्या में काम करने वाला साधक या संस्था वे सभी किसी न किसी रूप में परिषद् से अवश्य जुड़े रहे हैं।

7. शहीद स्मृति सभा, भिवानी

इस संस्था के संस्थापक सदस्य भागीरथ शर्मा अपने प्रयासों से संस्था को प्राणवान बनाए रखे हुए है। प्रत्येक वर्ष शहीदी दिवस पर यह संस्था राष्ट्रीय स्तर के साहित्यकारों को उपयुक्त मानदेय सहित आमंत्रित करती है। अब तक 38 आयोजनों में यह संस्था अपने आयोजन के स्तर को तथा कार्यक्रम में कविता तथा विचार के स्तर को स्थापित तथा संरक्षित करने में सफल रही है। पूरे वर्ष में केवल एक ही आयोजन संस्था द्वारा किया जाता है। लेकिन इसकी सफलता के लिए इसके कार्यकर्ता कोई कसर नहीं छोड़ते। शायद ही कोई शुद्ध कविता का उपासक राष्ट्रीय स्तर का कवि ऐसा न होगा जो इस संस्था के मंच को पाकर स्वयं को गौरवान्वित न मानता हो।

8. आनन्द कला मंच एवं शोध संस्थान, भिवानी

नवोदित साहित्यकारों को उपयुक्त मंच प्रदान करना तथा विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में उनके प्रकाशन में सहयोग करना इस संस्था का मुख्य उद्देश्य है। इस संस्था के नाम पर भिवानी में आनन्द नगर और आनन्द मार्ग चिह्नित है। रचनाकारों से विविध विषयों पर शोध व आलेख एकत्र कर उनको प्रकाशित किया जाता है। इस संस्था की लेखकीय समूह सहायता योजना बड़ी लोकप्रिय हैं। यह अपने रचनाकारों की पुस्तकें स्वयं प्रकाशित करते हैं। अब तक 12 पुस्तकें प्रकाशित की गई है। संस्था के संस्थापक सदस्य आनन्द प्रकाश आर्टिस्ट स्वयं एक कवि, लेखक तथा समालोचक है। 14 सितम्बर, 2013 को 'स्वर सम्राट' सम्मान विकास यशकीर्ति को, 'हिन्दी सेवी सम्मान' महेन्द्र सिंह सागर तथा रामनिवास शर्मा को, 'राष्ट्र भाषा गौरव' सम्मान डॉ0 मनोज भारत को प्रदान किया गया है।

अन्य संस्थाएँ

साहित्य की उपरोक्त संस्थाओं के अतिरिक्त कुछ अन्य संस्थाएँ भी भिवानी जनपद के नभ में नक्षत्र के समान टिमटिमा रही है। गंधर्व नाट्य कला मंच, नटराज कला मंच और मेघदूत थिएटर ग्रुप तीनों संस्थाएँ नाटक के क्षेत्र में अनेक बार सफल आयोजन कर चुकी है। भारत विकास परिषद तथा अग्रवाल सभा भिवानी ने भी अनेकों बार बड़े कवि सम्मेलनों का आयोजन किया है।

निष्कर्ष यह है कि भिवानी जनपद की संस्थाओं ने यहाँ पर साहित्य परिवेश निर्माण ने अपने दायित्व का पूर्णता से निर्वहन किया है।